CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2024 - 8.029

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

विकसित भारत @ 2047

डॉ.अशोक कुमार महला
सहायक आचार्य (राजनीति विज्ञान), राजकीय कला महाविद्यालय, सीकर
डॉ.सुलोचना
सहायक आचार्य (राजनीति विज्ञान), एस.के.राजकीय कन्या महाविद्यालय, सीकर
Email-drashokmahala@gmail.com, Mobile- 7014645458

First draft received: 15.05.2024, Reviewed: 25.05.2024, Final proof received: 26.05.2024, Accepted: 18.06.2024

सारांश

2047 का भारत कैसा हो यह एक बहुत महत्वपूर्ण विषय है। इस संदर्भ में हम सबको मिलकर यह विचार करना होगा कि, 2047 में जब हम सब स्वराज का शताब्दी वर्ष मना रहे होंगे तब पूरी दुनिया यह कहे कि आज विकसित भारत अपने स्वराज का शताब्दी वर्ष मना रहा है, दुनिया यह भी कहे कि जो भारत अपना शताब्दी वर्ष मना रहा है उस भारत ने अमृतकाल के दौरान विकसित होने का लक्ष्य रखा था। दिनांक 11 दिसम्बर 2023 को भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने ''विकसित भारत @ 2047'' विषय पर भारत के राज्यपालों व शिक्षाविदों को सम्बोधित करते हुए कहा कि ''सभी का ध्येय विकसित भारत हो, भारत किस तरह विकसित बनने के मार्ग पर अग्रसर हो यह सभी को मिलकर प्रयास करना है। देश का नागरिक जिस भी भूमिका में है वह भारत को विकसित बनाने का प्रयास करें।''

मुख्य शब्द : *भारत, अमृतकाल आदि.*

प्रस्तावना

2047 का भारत कैसा हो यह एक बहुत महत्वपूर्ण विषय है। इस संदर्भ में हम सबको मिलकर यह विचार करना होगा कि, 2047 में जब हम सब स्वराज का शताब्दी वर्ष मना रहे होंगे तब पूरी दुनिया यह कहे कि आज विकसित भारत अपने स्वराज का शताब्दी वर्ष मना रहा है, दुनिया यह भी कहे कि जो भारत अपना शताब्दी वर्ष मना रहा है उस भारत ने अमृतकाल के दौरान विकसित होने का लक्ष्य रखा था। दिनांक 11 दिसम्बर 2023 को भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने ''विकसित भारत @ 2047'' विषय पर भारत के राज्यपालों व शिक्षाविदों को सम्बोधित करते हुए कहा कि ''सभी का ध्येय विकसित भारत हो, भारत किस तरह विकसित बनने के मार्ग पर अग्रसर हो यह सभी को मिलकर प्रयास करना है। देश का नागरिक जिस भी भूमिका में है वह भारत को विकसित बनाने का प्रयास करें।''

इस प्रकार भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा विकसित भारत का औपचारिक शुभारंभ करना एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। जब हम स्वराज का शताब्दी वर्ष मना रहे होंगे यानी वर्ष 2047 को भारत को विकसित राष्ट्र की श्रेणी में लाने की संभावना वास्तव में बहुत ही मनोरम है। भारत की तीव्र प्रगति को देखते हुए इस महत्वाकांक्षी लक्ष्य को साकार कर सकना संभव नजर आता है। इससे पूर्व भी भारत के माननीय प्रधानमंत्री ने कहा कि हम हमारे देश में स्वतंत्रता सेनानियों का स्मरण करेंगे, उनसे प्रेरणा लेंगे। उन्होंने कहा कि हम स्वाधीनता के 75 वें वर्ष में खड़े हैं और हमें आगामी 25 वर्ष के संकल्प के साथ आगे बढ़ना है, इसलिए उन्होंने कहा कि 75 वर्ष की यात्रा को पूर्ण करते हुए आज जहां पर भारत खड़ा है उसको हम भारत का अमृतकाल कह सकते हैं। अर्थात भारत इस समय अमृतकाल में है और आगामी 25 वर्षों में भारत के विकास का संपूर्ण खाता तैयार करने में हम सब की एक महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी तो दूसरी ओर साथ ही साथ भारत का प्रत्येक व्यक्ति स्वराज–75 के इस संकल्प पर्व पर 2047 तक भारत को विकसित बनाने का संकल्प ले। इसलिए हमें अगले 25 वर्षों के कालखंड में एक नई प्रतिबद्धता के साथ कार्य करने का संकल्प लेना है। हमें यह सोचकर दृढ़ता से आगे बढ़ना है कि शताब्दी वर्ष में भारत कहां खड़ा होगा। वर्ष 1947 में स्वतंत्रता की जो यात्रा हमने प्रारंभ की है वह वर्ष 2047 तक पहुंचने तक अपने लक्ष्य तक पहुंचेगी क्या? यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है।

1947 में हमने स्वतंत्रता की यात्रा प्रारंभ की इसका अर्थ यह हुआ कि 1947 को हमें स्वराज मिला था, हम स्वाधीन हुए थे अर्थात् स्व के अधीन हुए, पर क्या हमें स्वतंत्रता मिली? अर्थात स्वराज मिल गया। स्वाधीनता से स्वतंत्रता की ओर अभी हमें जाना है। स्वाधीनता समर के सूत्रधारों के मन में स्वतंत्र भारत की जो संकल्पना रही वह ऐसे भारत की थी जिसका समग्र तंत्र स्व आधारित हो अर्थात स्व प्रेरित हो। हमारा उद्देश्य यह था कि हम समाज जीवन में एक नई दिशा देंगे पूरी दुनिया को। भारत जिस आधार पर विश्व गुरु रहा है, भारत जिस आधार पर सोने की चिड़िया रहा है, भारत ने जिस आधार पर पूरी दुनिया को दिशा दिखाई, उस स्व के आधार पर भारत के संस्थान खड़े होंगे और दुनिया को प्रेरणा देंगे। लेकिन दुर्भाग्य से औपनिवेशिक मानसिकता हम पर हावी रही और दुर्भाग्य से कुछ भ्रम कुछ दुष्चर्क स्वाधीनता के बाद ऐसे चले कि स्व का विस्मरण हो गया। अब यह 25 वर्षों का संकल्प लेना है कि स्व का पुनःस्मरण हो, उसकी पुनर्स्थापना हो। यानि भारत पूर्ण रूप से स्वतंत्र हो।

यहां प्रश्न यह उठता है कि हमें स्वतंत्रता कब मिलेगी या क्या हम 2047 तक स्वतंत्रता प्राप्त कर लेंगे? इस प्रश्न का एक ही उत्तर है वह यह है कि, ''जब स्वत्व के अधीन संपूर्ण तंत्र होगा तब भारत स्वतंत्र होगा।'' यानी हमें स्वत्व प्राप्त नहीं हुआ है, उस ओर अभी हमें बढ़ना है। जब हमें स्वत्व प्राप्त हो जाएगा तब सही मायने में भारत विकसित होगा। अब हमें स्वत्व प्राप्त होगा, हमारी सांस्कृतिक मान्यताओं को पुनः स्थापित अब हम सब मिलकर करेंगे और कर भी रहे हैं जैसे अयोध्या में राम आ चुके हैं विराजमान हो चुके हैं। इसके साथ–साथ विकसित भारत की संकल्पना को साकार करने के लिए भारत को पहचानना जरूरी है और भारत की पहचान संस्कृति से है, यह संस्कृति हिंदुत्व है। इसलिए जब तक हम हिंदुत्व को नहीं पहचानेंगे तब तक विकसित भारत की बात करना अप्रासंगिक है। हिंदुत्व एक स्वभाव है। यह एक जीवन पद्धति है। यह एक जीवन दृष्टि है। विचारों की विविधता इसका आधार है। यह सनातन भारत का विचार है। यह परिवार की बात करता है तो यह पर्यावरण की बात भी करता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माननीय सर संघचालक श्री मोहन भागवत जी ने कहा था कि, ''अपने राष्ट्र का स्वत्व हिंदुत्व है।''

आज का शिशु उस समय राष्ट्र निर्माण की प्रमुख भूमिका में होगा। आज का शिशु देश का भविष्य नहीं, वर्तमान है क्योंकि उसका वर्तमान जिन संकल्पों से पोषित होगा वैसा भविष्य का भारत होगा। आज का युवक उसे समय प्रौढ़ मार्गदर्शक की भूमिका में होगा। इसलिए इस पीढ़ी को हमें चार प्रकार से तैयार

करना है– भारत को मानो, भारत को जानो, भारत के बनो और भारत को बनाओ। हम सबको मिलकर एक स्वाभिमानी भारत, एक संगठित भारत, एक सशक्त भारत, एक एकात्मक भारत और एक विकसित भारत का संकल्प लेना होगा। एक विकसित भारत जो केवल आंकड़ों से ही विकसित न हो बल्कि एक ऐसा विकसित भारत जिसमें परिवार की बात हो, जिसमें सनातन भारत की बात हो, जिसमें सांस्कृतिक मान्यताओं की स्थापना हो, जो पुनः विश्वगुरु हो, जो सनातन के साथ–साथ आधुनिक हो, जिसमें हम का भाव हो हम अर्थात अभी वाले ही नहीं बल्कि आदिकाल से चले आ रहे व आने वाले सभी शामिल हैं। यहां हम भाव हिंदुत्व का परिचायक है। हम सबको मिलकर यह संकल्प लेना होगा कि हम हमारे पूर्वजों के कर्तव्यों का स्मरण करें, पूर्वजों के संकल्पों का स्मरण करें, सनातन भारत की झलक दुनिया को दिखाएं, आधुनिक भारत की चमक भी दुनिया देखे और अपने स्व के आधार पर भविष्य के भारत का हम संकल्प लें।

2047 के विकसित भारत के लिए जरूरी है कि हम सब मिलकर स्वच्छता, जल संरक्षण, पर्यावरण, नागरिक कर्त्तव्य, नागरिक अनुशासन, युवा शक्ति, डिजिटल इंडिया, वोकल फॉर लोकल आदि विषयों पर विचार करें। भारत सरकार भारत के प्रत्येक युवा को विकसित भारत के संकल्प से जोड़ना चाहती है इस हेतु शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है, यद्यपि प्रधानमंत्री ने भी शिक्षकों को इस हेतु आह्वान किया था, अतः शिक्षकों को यह दृढ़ संकल्प लेना होगा कि 2047 में भारत को विकसित बनाकर रहेंगे। चुंकि शिक्षकों पर देश की युवा शक्ति को दिशा देने की जिम्मेदारी है। साथ ही शैक्षणिक संस्थाओं की भूमिका व्यक्ति का विकास करना है और व्यक्ति के विकास के माध्यम से ही राष्ट्र का निर्माण होता है और आज भारत जिस दौर में है, उसमें व्यक्तित्व निर्माण का अभियान बहुत महत्वपूर्ण हो गया है। आज हमारा लक्ष्य विकसित भारत व सशक्त भारत है और हम तब तक नहीं रूकेंगे जब तक लक्ष्य को प्राप्त न कर लें। शिक्षक वो लोग है जो देश के विकास के सपने को साकार करते है और युवा शक्ति को दिशा दिखाते है।

हम सब के पास सोचने के लिए बहुत कुछ है। हमें देश में ऐसी अमर पीढ़ी तैयार करनी होगी, जो आने वाले सालों में देश की नेता बनेगी, जो देश का नेतृत्व करेगी और उसे एक दिशा देगी। हमें देश के ऐसे युवा पौधे को तैयार करना है, जो राष्ट्रहित को सबसे ऊपर रखे, अपने कर्त्तव्यों को सबसे ऊपर रखे। हमें सिर्फ शिक्षा और कौशल तक सीमित नहीं रहना है। एक नागरिक होने के नाते, यह सुनिश्चित करने के लिए कि देश के नागरिक 24 घंटे सतर्क रहें, इस दिशा में प्रयासों को बढ़ाना जरूरी है। यह सब तभी संभव हो पाएगा जब हम सब मिलकर इस अभियान में जुट जाएं। अमृतकाल में हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि भारत में 2047 से पहले विकसित कर के रहेंगे।

इतिहास हर देश को एक ऐसा दौर देता है जब वह अपनी विकास यात्रा को कई गुना आगे बढ़ाता है। एक तरह से, यह उस देश का स्वर्णिम युग (अमृतकाल) है। यह भारत के लिए स्वर्णिम युग (अमृतकाल) है। भारत के इतिहास में यह वह दौर है जब देश एक बड़ी छलांग लगाने जा रहा है। हमारे आस–पास ऐसे कई देशों के उदाहरण है जिन्होंने एक निश्चित समय में इसी तरह की छलांग लगाकर खुद को विकसित किया है। इसलिए भारत के लिए भी सही समय है। हमें इस स्वर्णिम युग के हर पल का फायदा उठाना है, हमें एक पल भी बर्बाद नहीं करना है। इस अमृतकाल में हम सबको मिलकर यह संकल्प लेना होगा कि अब हम एक पल गवाए बिना भारत को विकसित करने के लिए तत्पर है।

''आज हर व्यक्ति, हर संस्था, हर संगठन को इस संकल्प के साथ आगे बढ़ना है कि मैं जो कुछ भी करूं वह विकसित भारत के लिए हो। आपके लक्ष्यों और आपके संकल्पों का ध्यान केवल विकसित भारत पर होना चाहिए।''

विकसित भारत के लक्ष्य को 2047 तक प्राप्त करने के लिए हर भारतीय को कई संकल्प लेने होंगे जैसेः–

1. विकसित भारत के संकल्प को पूर्ण करने के लिए विभिन्न पहलुओं पर विचार करना होगा और उस दिशा में काम भी करना होगा, इसके लिए कृषि जैसे क्षेत्रों को उच्च उत्पादकता वाले क्षेत्र की ओर बढ़ना होगा जिससे आर्थिक विकास की वृध्द्धि होगी, रोजगार का सृजन होगा और गरीबी कम होगी। इसके अतिरिक्त ऊर्जा दक्षता, कंपनियों की दक्षता एवं नवाचार में वृद्धि, उत्पादन व सेवाओं की गुणवत्ता, स्वास्थ्य, शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, शासन में जवाबदेहीता, पारदर्शिता और सार्वजनिक भागीदारी को भी बढ़ना होगा।

2. विकसित भारत के लिए किये जाने वाले आर्थिक प्रयासों के साथ–साथ खुशहाल भारत की थीम को भी साथ लेकर चलना होगा। अर्थात विकसित भारत के लिए केवल आर्थिक आंकड़ों की थीम ही नहीं आवश्यक है बल्कि उसके साथ–साथ शिक्षा, स्वास्थ्य, खेल, केयरिंग सोसायटी तथा संस्कृति आदि के संदर्भ में सशक्त भारतीय की अवधारणा पर भी विचार करना होगा।

3. कृषि, उद्योग, सेवाएं, इंफ्रास्ट्रक्चर, ऊर्जा, हरित अर्थव्यवस्था, शहर आदि के संदर्भ में फलती फूलती और सतत अर्थव्यवस्था दिशा में भी तेजी से काम करने की आवश्यकता है।

4. विज्ञान व प्रौद्योगिकी में नवाचार पर बोल देना होगा और साथ ही साथ अनुसंधान, डिजिटल, स्टार्टअप आदि पर भी विचार करना होगा।

5. सुशासन और सुरक्षा के विषय को केंद्रीय महत्व का रखते हुए इस दिशा में और अधिक कार्य करने की भी आवश्यकता होगी। इन सब के साथ–साथ हमें यह भी देखना होगा कि विश्व में भारत क्या भूमिका होगी उसे पर गहन चिंतन की आवश्यकता रहेगी।

6. हमें हमारी संस्कृति और ऐतिहासिक धरोहर के प्रति सम्मान की भावना रखनी होगी। खानपान हो, पहनावा हो, भाषा हो, संगीत हो, नृत्य हो, कला हो, हस्तशिल्प हो आदि के संदर्भ में हमें हमारी सनातन की परंपराओं को बनाए रखना होगा और उनके प्रति हमारे मन में गर्व का भाव आवश्यक है। भारत के प्रत्येक नागरिक को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी और पर्यावरण के प्रति एक आदर का भाव रखते हुए उसके प्रयास ऐसे हो जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन मिले।

7. भारत के प्रत्येक नागरिक को शिक्षा और कौशल पर बोल देना होगा तथा संकल्प लेना होगा कि वह सदैव कौशल के लिए शैक्षणिक नवाचारों को अपनाता रहेगा।

8. विकसित भारत के साथ–साथ स्वस्थ भारत की थीम को भी लेकर चलना होगा इसके लिए पौष्टिक आहार, नियमित व्यायाम व योग, परंपरागत व स्थानीय खेलो में भागीदारी, तनाव मुक्त जीवन आदि की दिशा में संकल्प लेना होगा

9. प्रत्येक नागरिक को पर्यावरण के संवर्धन सुरक्षा के लिए वचनबद्ध होना होगा। इसके लिए नागरिकों को सार्वजनिक परिवहन, बिजली की बचत, इलेक्ट्रॉनिक यंत्रो का अनावश्यक उपयोग न करना जैसे लिफ्ट की बजाय सीढ़ियों का प्रयोग करना आदि, यूज एंड थ्रो के स्थान पर टिकाऊ यंत्रों का इस्तेमाल करना, प्लास्टिक के स्थान पर कपड़े के बैंक का उपयोग करना, अधिकतम वृक्षारोपण करना, बूंद बूंद की पानी की बचत करना आदि करणीय संकल्प लेने होंगे।

10. भारत के प्रत्येक नागरिक को सामाजिक कल्याण की दिशा में सोचना होगा। बुजुर्गों का सम्मान करना उन्हें समय देना, स्थानीय सामाजिक समितियों का निर्माण करते हुए आस–पड़ोस में संवाद स्थापित करना, स्वर का लोकल को प्रोत्साहित करना, दिव्यांग जनों के प्रति संवेदनशील होना, मातृशक्ति का सम्मान करना, परिवार में बालक और बालिकाओं को सनातन की शिक्षा देते हुए उनमें चारित्रिक कोटी के मूल्य की स्थापना करना आदि विषयों पर विचार करना होगा

11. लोकतांत्रिक उत्तरदायित्व को भी समझना होगा। प्रत्येक नागरिक कोई संकल्प लेना होगा कि वह लोकतंत्र में अपना अधिकतम सहभाग करे।

12. भारत का प्रत्येक व्यक्ति नागरिक मूल्यों से परिपूर्ण हो इसके लिए सतत प्रयास की आवश्यकता है। जैसे सोशल मीडिया के प्रति हमारा क्या उत्तरदायित्व है, ट्रैफिक के नियमों की हम पालना कर रहे हैं क्या, क्या हम भ्रष्टाचार मुक्त भारत के निर्माण में अपनी भूमिका का निर्माण कर रहे हैं।

अतः 2047 तक भारत को विकसित बनाने के लिए देश के हर नागरिक की इसमें इनपुट और सक्रिय भागीदारी होनी आवश्यक है। हर किसी का प्रयास, यानी सार्वजनिक भागीदारी, एक ऐसा मंत्र है जिसके जरिए बड़े से बड़े प्रस्तावों को भी पूरा किया जा सकता है। उदाहरण के लिए स्वच्छ भारत अभियान हो, डिजिटल इंडिया अभियान हो, कोरोना के खिलाफ लड़ाई हो या फिर वोकल फॉर लोकल, इन सब में सभी ने सामूहिक प्रयासों की ताकत देखी है। एक विकसित भारत का निर्माण सामूहिक प्रयासों से ही करना है। 2047 तक भारत को विकसित बनाने के लिए प्रधानमंत्री का जो आह्वान था उनमें उन्होंने यह भी कहा कि, ''इतिहास हर देश को एक ऐसा दौर देता है जब वह अपनी विकास यात्रा को कई गुना आगे बढ़ाता है। एक तरह से, यह उस देश का स्वर्णिम युग (अमृतकाल) है। यह भारत के लिए स्वर्णिम युग (अमृतकाल) है। भारत के इतिास में यह वह दौर है जब देश एक बड़ी छलांग लगाने जा रहा है। हमारे आस–पास ऐसे कई देशों के उदाहरण है, जिन्होंने एक निश्चित समय में इस तरह की छलांग लगाकर खुद को विकसित किया है। इसलिए मैं कहता हूँ, यह भारत के लिए भी सही समय है। इमें इस स्वर्णिम युग के हर पल का फायदा उठाना है, हमें एक पल भी बर्बाद नहीं करना है।''